Nature of Language

भाषा की प्रकृति :-

भाषा की निम्नलिखित प्रकृति है

(1) भाषा एवं विचार का अटूट से सम्बन्ध होता है :- भाषा का विचार से अटूट सम्बन्ध होता है इसे एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। विचार के अभाव में भाषा का कोई मूल्य नहीं होता है। विचार प्रधान भाषा मनुष्य की विशेषता है। मनुष्य के अलावा अन्य प्राणियों में उनकी अपनी भाषा तो होती है, परन्तु विचार नहीं होते। इसप्रकार भाषा एवं विचार का अटूट सम्बन्ध है।

(2) भाषा अभिव्यक्ति का एक सांकेतिक साधन है - भाषा के रूप में प्रयुक्त संकेतों द्वारा समाज के सदस्य अपने भाव प्रकाशित एवं आपसी विचार-विनिमय करते हैं।

(3) भाषा का सम्बन्ध परम्परा से होता है -

भाषा का सम्बन्ध परम्परा से होता है। यह एक पीढ़ी से पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी द्वारा ग्रहण की जाती है। भाषा के द्वारा ही परम्परा कायम रहती है।

(4) भाषा अर्जित सम्पत्ति है :-

कोई व्यक्ति अनुकरण [illegible] भाषा का अर्जन अर्जित [illegible] के माध्यम से करता है। कोई भी व्यक्ति अनुकरण से [illegible] भाषा को अर्जित करता है। जिसे [illegible] कोई व्यक्ति किसी भाषा [illegible] अनुकरण के द्वारा अर्जित [illegible] अर्जित करता है न कि पैतृक सम्पत्ति।

(5) भाषा सामाजिक वस्तु है:- भाषा का अर्जन समाज के सम्पर्क से ही होता है। [illegible] भाषा का जन्म समाज में होता है। भाषा का विकास समाज में होता है तथा उसका प्रयोग भी समाज में किया जाता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस प्रकार उसे विचार-विनिमय के लिए भाषा की आवश्यकता होती है।

(6) भाषा परिवर्तनशील होती है:

मौखिक रूप से भाषा कही जाती है [illegible] भाषा का अर्जन अनुकरण के द्वारा होता है। परन्तु अनुकरण हमेशा अपूर्ण होता है। इस प्रकार भाषा में सदैव परिवर्तन होते रहता है। भाषा व्यक्ति के स्थान परिवर्तन के साथ बदलते रहता है। जब कोई व्यक्ति घर छोड़कर दूसरे शहर जाता है तो उस व्यक्ति के भाषा में भी परिवर्तन हो जाता है। भाषा में समय तथा स्थान के अनुसार परिवर्तन होता है।

(7) भाषा ज्ञान प्राप्ति का साधन है।

भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर सकता है। भाषा के माध्यम से ही हम प्राचीन और नवीन ज्ञान और विज्ञान पहचानने की समझ प्राप्त करते हैं। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है।

Characteristics of Language

भाषा की विशेषताएं

भाषा की विशेषताएं निम्नलिखित हैं

(1) प्रत्येक भाषा की कुछ ध्वनियों और ध्वनि समूह होते हैं। ध्वनि की लघुतम इकाई को ध्वनिग्राम कहते हैं।

(2) प्रत्येक भाषा की अपनी एक व्याकरण व्यवस्था होती है जिसे वाक्य विन्यास कहते हैं। प्रत्येक भाषा के वाक्यों में शब्द एक विशेष क्रम या व्यवस्था में होते हैं। यह व्यवस्था प्रत्येक भाषा में कुछ न कुछ भिन्न होती है।

(3) प्रत्येक भाषा के शब्दार्थ भिन्न-भिन्न होते हैं।

(4) भाषा के उच्चारण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रदान किया है।

(5) भाषा सामाजिक [illegible] क्रियाओं का एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण [illegible] है।

(6) भाषा का प्रयोग [illegible] [illegible] है [illegible] बार बार करता है।

(7) भाषा की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

(8) भाषा का प्रयोग मानव समुदाय में होता है, अतः भाषा समाज द्वारा निर्धारित एवं स्वीकृत होती है।

(9) भाषा का संस्कृति के साथ गहरा सम्बन्ध है।

(10) भाषा का [illegible] वाक् अवयवों द्वारा होता है।

Social Importance of Language

(भाषा का सामाजिक महत्व) :- [illegible]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक [illegible] क्रियाओं का आधार भाषा है। [illegible] समाज की संरचना और संगठन का निर्धारण भाषा के माध्यम से होता है। भाषा का [illegible] सामाजिक दृष्टिकोण से अधिक महत्व है।